



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्य अठारहवीं शताब्दी बिहार— कृषि की स्थिति : एक अवलोकन

Author. RAVI KUMAR GIRI RESEARCH SCHOLAR DEPARTMENT OF HISTORY
RKDF UNIVERSITY RANCHI JHARKHAND

सारांश : वर्तमान शोध पत्र अठारहवीं शताब्दी के मध्य में कृषि की स्थिति, अपेक्षाकृत कम अध्ययन वाले क्षेत्र अर्थात् बिहार के शासन के कुछ पहलुओं से संबंधित है। अठारहवीं शताब्दी की आवश्यक विशेषताओं की समझ से ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार अठारहवीं शताब्दी के बारे में संशोधनवादी विचारधारा के अनुरूप नहीं था। निश्चित रूप से यह अंग्रेजों के आने से पहले समृद्ध होने वाला प्रांत नहीं था। अंग्रेज बिहार की संपत्ति का निर्माण नहीं कर सके, इसके विपरीत हम बिहार में एक अलग तस्वीर देखते हैं जहां अंग्रेजों को अपेक्षाकृत गरीब प्रांत पर निर्माण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह शोध पत्र पूर्व के अध्ययन विषय अध्ययनों से अलग है एवं समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं। शोधपत्र पुस्तकालीय एवं विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है। यह अध्ययन शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द : आर्थिक विकास, राजनीतिक संस्थाओं, गरीब प्रांत, मुगल अर्थव्यवस्था, आर्थिक परिवर्तन आदि।

अठारहवीं शताब्दी के आरंभिक मध्य भारत के बारे में पारंपरिक दृष्टिकोण यह है कि, मुगल पतन के बाद, भारत आर्थिक गिरावट के साथ पतन, अराजकता, भ्रम और प्रशासनिक अराजकता की अवधि में प्रवेश कर गया। इस दृष्टि से, भारत की कमजोरियों और असफलताओं ने अंग्रेजों को अपना शासन स्थापित करने और भारत पर परिवर्तन थोपने का अवसर दिया। लेकिन कुछ विद्वानों ने इस अवधि की अपेक्षाकृत आशावादी तस्वीर खींचकर इस दृष्टिकोण को चुनौती दी है। इस संशोधनवादी दृष्टिकोण से पता चलता है कि भारत में अठारहवीं शताब्दी क्षय की एक 'काली शताब्दी' होने के बजाय महत्वपूर्ण आर्थिक विकास और नई राजनीतिक संस्थाओं के विकास को देखा। यह वे परिवर्तन थे जिन्होंने अंग्रेजों को हस्तक्षेप करने का मौका दिया, न कि अराजकता से आदेश लाकर, बल्कि जोरदार और प्रभावी स्थानीय राज्यों पर कब्जा करके, अर्थव्यवस्थाओं के फलने-फूलने से। अठारहवीं शताब्दी के धन के लाभार्थियों के रूप में अंग्रेजों के इस पैटर्न को अब तक बंगाल, अवध और कोरोमंडल तट के लिए परीक्षण किया गया है, लेकिन निश्चित रूप से बिहार के मामले में नहीं। ये स्पष्टीकरण इस दृष्टिकोण को पुष्ट करने में मदद कर सकते हैं कि मुगल अर्थव्यवस्था "मुगल साम्राज्य के पतन से बची रही, और अठारहवीं शताब्दी की राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, तत्कालीन साम्राज्य के एक बड़े हिस्से को आपस में जोड़े रखा"। लेकिन 'मुगल साम्राज्य के सभी क्षेत्रों और प्रांतों में समस्याओं के लिए आम तौर पर लागू होने वाली एक व्याख्या को खोजना मुश्किल होगा। ऐसा लगता है कि बिहार ने अठारहवीं शताब्दी में एक अलग तस्वीर पेश की है। यह निश्चित रूप से धन का क्षेत्र नहीं था। अठारहवीं शताब्दी में बिहार की वास्तविक स्थिति को दर्शाने के लिए इस शोध पत्र में बिहार में कृषि स्थितियों को स्पष्ट किया गया है।

कृषि की स्थिति : अंग्रेजों ने प्रांत को जानने के लिए विविध पेशेवरों को नियुक्त किया भूमि सर्वेक्षणकर्ता, कलाकार, जनगणना अधिकारी, पुरातत्वविद, मिशनरी और लोकगीत संग्रहकर्ता, जिन्होंने बिहार के स्मारकों को चित्रित किया, गाँव की सड़कों का चार्ट बनाया और इसके निवासियों की भूमि जोत दर्ज की। इन और अन्य प्रतिपादनों के माध्यम से, अंग्रेजों ने अध्ययन

और नियंत्रण की वस्तु का निर्माण किया। बक्सर की लड़ाई में जीत ने कंपनी के सूचना हितों को विशुद्ध रूप से व्यापारिक प्रकृति से राजनीतिक नियंत्रण और राजस्व खेती में बदल दिया। हालांकि सर्वेक्षकों को प्लासी के बाद पहले ही भेज दिया गया था, रेनेल पर बंगाल और बिहार के पहले व्यवस्थित और व्यापक ब्रिटिश सर्वेक्षण का आरोप लगाया गया था। 6 बिहार अपेक्षाकृत गरीब प्रांत था। सूबे में जा भी संपत्ति रही होगी, वह ज्यादातर पटना और उसके आस-पास के इलाकों में रही होगी। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में ग्रामीण इलाकों में स्थितियों के बारे में साक्ष्य बहुत कम हैं। बुकानन हैमिल्टन द्वारा किए गए बिहार के कुछ जिलों के बहुत पूर्ण सर्वेक्षण में बहुत मूल्यवान जानकारी शामिल है, लेकिन वे लगभग साठ साल बाद की स्थितियों का वर्णन करते हैं, व्यापक जनसांख्यिकीय और आर्थिक परिवर्तन होने के बाद। हालांकि, अठारहवीं शताब्दी के मध्य की स्थितियों के बारे में कुछ साक्ष्य उन विभिन्न अधिकारियों की रिपोर्टों से एकत्र किए जा सकते हैं, जिन्होंने 1760 के दशक में बिहार की यात्रा की थी, जिन्हें ब्रिटिश इतिहासकार रॉबर्ट ओर्मे द्वारा एकत्र किया गया था। उदाहरण के लिए, 1766 में बिहार के कैप्टन डी ग्लॉस के सर्वेक्षण से पता चलता है कि प्रांत के अधिकांश हिस्सों में खेती के तहत भूमि सीमित थी। सूबे के कई जिलों में बिखरी कृषि बिखरी हुई थी।

बिहार के डी ग्लॉस के सर्वेक्षण से तीन साल पहले, कैप्टन मैक्लीन द्वारा 1763 में सरकार मुंगेर, मध्य बहार और रोटस के माध्यम से की गई यात्रा डी ग्लॉस के निष्कर्षों की पुष्टि करती है। मध्य बहार और मध्य रोटस। वह जिस मार्ग से होकर गुजरे उस पर बहुत कम आवास के बारे में बताते हैं। उन्होंने कम जनसंख्या के संदर्भ में अल्प खेती की व्याख्या की। खेती के तहत भूमि की छोटी मात्रा के परिणामस्वरूप, भोजन के भंडार के अभाव में 1770 के अकाल में आबादी का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो गया। इस प्रकार हमें अठारहवीं शताब्दी के बिहार की जो तस्वीर मिलती है, वह यह है कि यह एक समृद्ध देश नहीं था और जनसंख्या का स्तर कम था, जो कम खेती की व्याख्या करता है, हालांकि यह तर्क दिया गया है कि "जनसंख्या वृद्धि अपने आप में खेती में वृद्धि नहीं करती है, लेकिन इसकी प्राथमिक स्थितियों में से एक का गठन किया। 9 1769-70 के अकाल के बाद इस बात के प्रमाण हैं कि कंपनी ने रैयतों को उत्तर में पहाड़ियों से कंपनी की भूमि में बसने के लिए प्रोत्साहित किया। यह मुख्य रूप से इसलिए था क्योंकि अकाल के बाद बिहार में एक बड़ी जनसंख्या का विनाश हुआ था। यह सुझाव दिया गया है कि बंगाल में 1770 के अकाल की तीव्रता अपेक्षा से बहुत कम थी और इसने मृत्यु दर के अनुमानों को कम कर दिया है। मेरे निष्कर्ष बताते हैं कि बिहार में जनसंख्या का स्तर पहले से ही इतना कम था कि दीर्घकालिक प्रभाव बंगाल की तुलना में बहुत अधिक गंभीर थे। बिहार में कम जनसंख्या के कारण चाहे जो भी हों, इसे 'कभी-कभी होने वाले बुखार' के रूप में भी समझाया जा सकता है, जो हर साल बड़ी संख्या में आबादी को बहा ले जाता है। हर साल पेचिश, मलेरिया, चेचक और टाइफाइड जैसी बीमारियां से लोगों की मौत होती है।

बिहार के चरम दक्षिण अर्थात् पलामू, रामगुर और छोटानागपुर से आच्छादित क्षेत्र जहां पहाड़ों और घने जंगलों से आच्छादित है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, जब हंटर ने

छोटानागपुर के बारे में लिखा, तब भी इसमें “जंगली जानवरों से भरे पहाड़ और जंगल शामिल थे।” टिप्पणी की कि उसने कुछ भी नहीं देखा था, लेकिन केवल कुछ बड़े जानवरों की चीखें सुनीं। 14 इन क्षेत्रों में रहने वाले लोग मूल रूप से आदिवासी थे और किसी भी बाहरी व्यक्ति से बहुत दुश्मनी रखते थे। वे जमीन पर खेतों नहीं करते थे बल्कि पड़ोसी प्रांतों में छापे मारकर अपना गुजारा करते थे। बंगाल की पश्चिमी सीमाओं पर काम कर रहे रेनेल के सर्वेक्षकों ने छोटानागपुर और जंगलतराय की जनजातियों के बीच लगातार साहसिक कार्य किए। चुआरों ने अक्सर सर्वेक्षण करने वाली पार्टी पर हमला किया। 16 बिहार को आठ सरकार या जिलों में विभाजित किया गया था कृ चंपारण, सारण, हाजीपुर, तिरहुत, शाहाबाद, रोतास, बहार और मुंगेर। पूर्णिया और भागलपुर (जो वर्तमान में बिहार राज्य में शामिल हैं) पर इस अध्याय में चर्चा नहीं की जाएगी। पूर्णिया बिहार की प्रांतीय सरकार से स्वतंत्र था और एक फौजदार के नियंत्रण में था। 17 भागलपुर हमेशा अपना राजस्व मुर्शिदाबाद के खजाने में देता था 18 यह बिहार की तुलना में बंगाल का अधिक हिस्सा था। इसके अलावा, 1773 के बाद भागलपुर को औपचारिक रूप से बिहार से अलग कर दिया गया और बंगाल की दीवानी से जोड़ दिया गया। 19 प्रांत के पूर्व में मोंगहिर जिला था जो आंशिक रूप से पहाड़ियों और जंगलों से घिरा हुआ था जिसमें खेती की जमीन के बिखरे हुए इलाके थे। मुंगेर के निकट सरकार बहार थी। सरकार का पूर्वी भाग पहाड़ियों और जंगलों से आच्छादित था। मध्य बहार में समृद्ध उपजाऊ मिट्टी थी, जिसकी पूरी खेती आमतौर पर नहीं की जाती थी। हालाँकि, बहार, टेकरी, इस्लामपुर और दाउदनगर के शहरों के आसपास के क्षेत्रों में खेती योग्य भूमि के बड़े हिस्से थे। गंगा नदी के किनारे पटना के आसपास का क्षेत्र काफी उपजाऊ था और ऐसा लगता है कि काफी बड़ी आबादी का समर्थन करता था। शेरघाटी के दक्षिण बहार में घने जंगल थे। 1850 के दशक के अंत में बिहार का राजस्व सर्वेक्षण करने वाले शेरविल को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि परगना में जो भी जनसंख्या वृद्धि हुई है, वह “जनसंख्या के महासागर में एक बूंद के रूप में फिर से लोगों को खेती करने और संपूर्ण मूल्यवान और पूर्व में खेती करने की आवश्यकता थी।” इस परगना में खेती की भूमि, अब जंगल और जंगल से आच्छादित है। लेकिन ऐसा लगता है कि शेरघाटी हमेशा जंगलों से ढकी रहती थी। डी ग्लॉस ने शेरघाटी में मिले घने जंगलों का जिक्र किया था।

बिहार के निकट सरकार रोहतास थी। पूर्वी रोटा में अनुपजाऊ भूमि के उपजाऊ इलाके शामिल थे। सोन जिले की सबसे महत्वपूर्ण नदी थी। नदी के दोनों किनारों पर घने जंगल थे। झाड़ियों में रहने वाले लोग काफी शत्रुतापूर्ण थे और धनुष-बाणों से लैस थे और सर्वेक्षक की पार्टी पर हमला करने की धमकी दे रहे थे। एक अवसर पर डी ग्लॉस ने “एक जंगल के साथी को पकड़ा, जो सशस्त्र था, जिसने हिरकरारों में से एक को गोली मारने का प्रयास किया था” पश्चिमी रोटा पहाड़ियों और जंगलों से ढका हुआ था। दक्षिणी रोटास में रोटासगुर पहाड़ी के बारे में, डी ग्लॉस ने लिखा है कि यह बहुत खड़ी है और जंगलों से बहुत शर्मिदा है, जिसमें ‘बाघों की संख्या होती है। सेंट्रल रोटा में बहुत समृद्ध उपजाऊ मिट्टी थी जिसे बिना जुताई के छोड़ दिया गया था। सरकार बहार के उत्तर में सरकार हाजीपुर है। गंगा और गंडक नदियों ने हाजीपुर की दक्षिणी सीमा का निर्माण किया। उनके किनारों के साथ-साथ देश घने जंगलों से आच्छादित था। प्रांत के एकदम उत्तर में चंपारण या बेतिया स्थित है। यहाँ भी गंडक सबसे महत्वपूर्ण नदी थी और गंडक के किनारे-किनारे घने जंगल

थे। वास्तव में चंपारण पूरी तरह से पहाड़ियों और जंगलों से आच्छादित था जिसमें बहुत कम या कोई खेती नहीं थी। चंपारण कलेक्टर ने 1794 में अनुमान लगाया था कि जिले में एक चाथाई से अधिक खेती नहीं हुई थी। लगभग पचास वर्षों के बाद व्याट ने सबसे बड़े परगना मझौआ के उत्तरी भागों की खोज की, जो 1793 में "जंगलों से आच्छादित", "आबाद और सुंदर खेती के तहत" थे। चंपारण के बारे में, डी ग्लॉस ने यह भी कहा कि "यह एक अच्छा देश था जिसमें कई आम, लच (संभवतः लार्च) और सेसा जंगल हैं, लेकिन कुछ गाँवों के साथ बंजर और बंजर भूमि पाई जाती है और जो किसानों द्वारा छोड़े जाने की संभावना है .. तिरहुत, सारण और शाहाबाद के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है क्योंकि शुरुआती सर्वेक्षकों ने बिहार में उन क्षेत्रों का दौरा नहीं किया था। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि ये सरकारें बिहार की बाकी सरकारों से मिलती-जुलती होंगी। संभवतः इन क्षेत्रों में खेती भी कम थी और आवास भी कम। 1809-10 के आसपास शाहाबाद का दौरा करने वाले बुकानन हैमिल्टन ने देखा था कि वहाँ जनसंख्या बहुत कम थी। मैदानों और पहाड़ियों में कुछ खेती होती थी।

शाहाबाद जिला ज्यादातर एक समतल मैदान था लेकिन दक्षिण में इसमें 800 वर्ग मील का पहाड़ी इलाका, कैमूर का पठार शामिल था। सोन कैमूर पर्वतमाला से गुजरा और सीधे मैदान के पार गंगा में बह गया। सोन ने शाहाबाद, गया और पटना में भी विनाशकारी बाढ़ का कारण बना। शाहाबाद बंजर भूमि के बड़े हिस्से थे, लेकिन समय के साथ नहरों के निर्माण के साथ, ये विशाल अनुत्पादक क्षेत्र अत्यधिक उत्पादक बन गए, जिससे भूमि का मूल्य बहुत बढ़ गया। गाद और रेत के जमाव से निर्मित भूमि जिसे दियारा कहा जाता है, अक्सर बहुत मूल्यवान कृषि भूमि बन जाती थी। तिरहुत के बारे में एक प्राचीन इतिहास और संस्कृति के साथ एक उपजाऊ और घनी आबादी वाले जिले दरभंगा के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त की जा सकती है। देश कई स्थानों पर उथली झीलों की श्रृंखलाओं के साथ नीचा था। देश को सींचने वाली नदियाँ नेपाल से गाद लाती हैं। विस्तृत जलोढ़ मैदान ने चावल और कई अन्य फसलों की भारी फसलें पैदा कीं। यह जिला अपने आम के पेड़ों के लिए प्रसिद्ध था। जैसे ही पेड़ फल देने की अवस्था में पहुंचे, आम के पेड़ों का नकली विवाह विस्तृत समारोह के साथ किया गया। अतः कुल मिलाकर बिहार एक समृद्ध जनसंख्या वाला समृद्ध प्रान्त प्रतीत नहीं होता, न ही यहाँ बहुतायत से खेती की जाती थी। लेकिन समीक्षाधीन अवधि के दौरान बिहार में खेती की सीमा के बारे में निश्चित अनुमान लगाना संभव नहीं है। जाहिर तौर पर यह उन्नीसवीं सदी की तुलना में बहुत कम था। अठारहवीं शताब्दी के बिहार में उगाई जाने वाली फसलों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है— खाद्यान्न और नकदी फसलें। खाद्यान्नों में चावल, गेहूँ, दालें और बाजरा प्रमुख खाद्यान्न थे कपास, अफीम, गन्ना और पान के पत्ते प्रमुख नकदी फसलें थीं। मुजफ्फर आलम ने अठारहवीं शताब्दी में बढ़ते राजस्व के आंकड़ों के संदर्भ में बिहार की समृद्धि को मापने का प्रयास किया है। लेकिन बिहार ने कभी उच्च राजस्व नहीं दिया, जैसा कि ब्रिटिश काल में संग्रह से स्पष्ट है, न ही नवाब प्रांत से प्रभावी रूप से एकत्र करने में सक्षम थे। कम से कम ब्रिटिश काल में जमा और हसील के

आंकड़ों के बीच बहुत बड़ा अंतर नहीं था । मीर कासिम केवल एक बार जमींदारों और जागीरदारों की गुप्त वसूली को जब्त करके बिहार से राजस्व के रूप में लगभग 65 लाख रुपये एकत्र करने में सफल रहा। लेकिन 65 लाख रुपये भी मुजफ्फर आलम द्वारा दिए गए हसील के आंकड़ों से मेल नहीं खाते । उनका दावा है कि 1750 में अकेले हैसिल 1,00,79,141 रुपये था और उसने 1685 और 1750.34 के बीच हैसिल के आंकड़ों में लगातार ऊपर की ओर रुझान दिखाया है, लेकिन इतनी बड़ी राशि निश्चित रूप से 1750 में एकत्र नहीं की गई थी।

मुजफ्फर आलम द्वारा दिए गए राजस्व के आंकड़े अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतीत होते हैं। ब्रिटिश काल में भारी दबाव में भी राजस्व उस राशि के आस-पास भी नहीं पहुँच पाता था । 1766-67 और 1767-68 के वर्षों के अपवाद के साथ (जब एकत्र राजस्व क्रमशः 66 लाख और 55 लाख रुपये था) संग्रह 1781 से पहले कभी भी 50 लाख से अधिक नहीं हुआ । मीर कासिम द्वारा एकत्र की गई राशि, 65 लाख रुपये, केवल एकत्र की गई थी। नवाब के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान एक बार बिहार से छ जमींदारों ने निश्चित रूप से हसील का कुछ हिस्सा हड़प लिया, लेकिन बिहार के राजस्व के लिए दिए गए बहुत अधिक आंकड़ों के हिसाब से पर्याप्त नहीं था।

सन्दर्भ :

1. बर्नियर, फ्रेंकोइस। मुगल साम्राज्य में यात्रा, खंड 1 और 2, आर. सी. लेपेज एंड कंपनी, लंदन, 1826
2. बौरे, थॉमस ए ज्योग्राफिकल अकाउंट ऑफ कंट्रीज राउंड द बे ऑफ बंगाल, 1669-1679, हकलुइट सोसाइटी प्रकाशन, कैम्ब्रिज, 1905
3. ग्रियर्सन, जॉर्ज ए. बिहार किसान जीवन, बंगाल सचिवालय प्रेस, कलकत्ता, 1885
4. हैंड, जे. आर. अर्ली इंग्लिश एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ बिहार, 1781-85, बंगाल सेक्रेटेरिएट प्रेस, कलकत्ता, 1894
5. हेस्टिंग्स, वॉरेन, बनारस में विद्रोह की एक कथा, सी. विल्किंस, कलकत्ता, 1781।
6. जेम्स, जे.एफ.डब्ल्यू. बिहार के राजस्व प्रमुख के पत्राचार से चयन, 1781 - 1786, सरकारी प्रिंटिंग प्रेस के अधीक्षक, पटना, 1919
7. किंडरस्ले, जेमिमा । ईस्ट इंडीज के पत्र, जे. नोर्स, लंदन, 1777
8. रनेल, जेम्स। ए बंगाल एटलस, 1781
9. टैवर्नियर, जीन बैप्टिस्ट द ट्रैवेलर्स इन इंडिया, खंड 1 और 2, मैकमिलन एंड कंपनी, लंदन, 1889
10. विल्सन, मिंडेन । बिहार इंडिगो फ़ैक्ट्रीज एंड अदर ट्रैक्ट्स का इतिहास, कलकत्ता जनरल प्रिंटिंग कंपनी, कलकत्ता, 1908।

11. ब्रिज, टी.डब्ल्यू. पलामू जिले में सर्वेक्षण और निपटान संचालन पर अंतिम रिपोर्ट, 1913दृ1920, अधीक्षक सरकारी मुद्रण, पटना, 1921
12. बुकानन हैमिल्टन, फ्रांसिस द्य 1809 – 10, बिहार और उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1934 में शाहाबाद जिले का लेखा ।
13. बुकानन हैमिल्टन, फ्रांसिस द्य 1811–12 में बिहार और पटना के जिलों का लेखा, खंड 1 और 2, बिहार और उड़ोसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1925
14. बुकानन हैमिल्टन, फ्रांसिस । 1812 – 1813, बिहार और उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1926 में शाहाबाद जिले के सर्वेक्षण के दौरान रखा गया फ्रांसिस बुकानन का जर्नल ।
15. हंटर, बंगाल का एक सांख्यिकीय खाता, खंड द्य 11, टूबनर एंड कंपनी, लंदन, 1877
16. हंटर, एनल्स ऑफ रूरल बंगाल, वेस्ट बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, गवर्नमेंट ऑफ वेस्ट बंगाल, कलकत्ता, 1996
17. हंटर, बंगाल एमएस रिकॉर्ड्स, 4 खंड, एलन एंड कंपनी, लंदन, 1894
18. जेम्स, जे.एफ.डब्ल्यू. पटना जिले (1907–1912), बिहार और उड़ीसा सरकारी प्रेस, पटना, 1914 में सर्वेक्षण और निपटान संचालन पर अंतिम रिपोर्ट ।
19. जेम्स, जे.एफ.डब्ल्यू. बिहार और उड़ीसा जिला गजेटियर – मुंगेर, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, पटना, 1924 ।
20. केर जे.एच. सारण जिले में सर्वेक्षण और निपटान संचालन पर अंतिम रिपोर्ट, 1893–1901, बंगाल सचिवालय प्रेस, कलकत्ता, 1903
21. मैकफर्सन एच. सोंथल परगना जिले म सर्वेक्षण और निपटान संचालन पर अंतिम रिपोर्ट, 1898दृ1907, बंगाल सचिवालय बुक डिपो, कलकत्ता, 1909
22. ओ'मैले, एल.एस.एस. बिहार और उड़ीसा जिला गजेटियर– पटना, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, पटना, 1924
23. ओ'मैले, एल.एस.एस. बिहार और उड़ीसा जिला गजेटियर – शाहाबाद, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, पटना, 1924